

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य (asst. prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर

पाठ्य सामग्री,
स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष, द्वितीय पत्र के लिए।

दिनांक- 14.05.2020
(व्याख्यान संख्या- 25)

* सप्रसंग व्याख्या

मूल अवतरण:-

"कबिरा देखा अँग....
.... नैनों रहा सहाय।।"

प्रस्तुत पद्यावतरण ज्ञानमार्गी निर्गुण धारा के सर्वश्रेष्ठ कवि कबीर द्वारा रचित है। यह साखी हमारी पाठ्यपुस्तक 'कबीर वचनावली' में 'परिचय' शीर्षक के अंतर्गत संकलित है।

प्रस्तुत साखी में कबीर ब्रह्म की व्यापकता और महत्ता की झलक उपस्थित करते हुए कहते हैं कि उन्होंने उसका एक ही अंग देखा किंतु उसकी भी महिमा उनसे कही नहीं जा रही है। वह तेज-पुंज और स्पर्श-मणि के समान धनी स्वामी मेरे नेत्रों में समा रहा है।

कवि के कहने का भाव यह है कि जीव ईश्वर के एक अंग ही देख पाता है अर्थात् आंशिक रूप से ही उनके दर्शन करता है; तब भी उनकी महिमा का बखान नहीं कर सकता। वह शक्ति का पुंज है, जो अनंत आलोक रूप में प्रतिभासित होता रहता है। परमात्मा पारस की तरह सौभाग्यदाता है। लोहे से कंचन बनाने की उसमें पूर्ण क्षमता है। उसके अनंत सौंदर्य का प्रकाश भक्तों के नेत्रों में समा जाता है।